भक्तामर मण्डल विधान

-रचयित्री-
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 117
ISBN 978-93-80353-11-1

श्री भक्तामर मण्डल विधान

(श्रीमानतुंगाचार्यविरचित भक्तामर स्तोत्र के आधार पर)

–: रचयित्री :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org,
www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com, rk195057@yahoo.com

नवमाँ संस्करण	वीर नि. सं. 2543	मूल्य
2200 प्रतियाँ	ज्येष्ठ सुदी पंचमी, 30 मई 2017	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादकः–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

(सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन)

प्रथम संस्करण, सन् 1991-प्रतियाँ 3300, द्वितीय, सन् 1999-प्रतियाँ 5500, तृतीय संस्करण, सन् 2007-प्रतियाँ 3300, चतुर्थ संस्करण, सन् 2009-प्रतियाँ 2200 पंचम संस्करण, सन् 2010-प्रतियाँ 2200, छठा संस्करण, सन् 2012-प्रतियाँ 2200 सप्तम संस्करण, सन् 2013-2200, आठवाँ संस्करण, सन् 2015-2200 प्रतियाँ

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

प्रस्तावना

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

भक्तामर स्तोत्र का माहात्म्य जैन समाज में काफी समय से प्रचलित है। इसका परिचय देने की कोई विशेष आवश्यकता नहीं है। इसमें मुख्य रूप से प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की स्तुति आचार्य श्री मानतुंग स्वामी ने की है। अपने ऊपर आए उपसर्ग के निवारण और जिनेन्द्र भक्ति का माहात्म्य बताने हेतु भक्तामर की रचना हुई है। भक्तामर शब्द स्तोत्र के प्रारंभ में होने के कारण इसका नाम ''भक्तामर'' यह सार्थक पड़ गया है।

इस भक्तामर स्तोत्र का अतिशय मैंने स्वयं कई बार प्रत्यक्ष देखा है कि कई स्त्री-पुरुष अति भयंकर बीमारी में भी भक्तामर के प्रभाव से नव जीवन को प्राप्त कर चुके हैं। मैं यहाँ एक प्रत्यक्ष लघु घटना बताती हूँ। जिसे पढ़कर आप भी भक्तामर के चमत्कार से परिचित हो सकेंगे।

उत्तरप्रदेश में बहराइच नाम का एक शहर (जिला) है। वहाँ श्री प्रेमचंद जैन की ध.प. श्रीमती देवी (मेरी गृहस्थावस्था की बहन) को सितम्बर 1982 में पेट में अकस्मात् बहुत तेज दर्द हुआ। कई डॉक्टरों से चेकअप कराने पर भी ठीक से निर्णय नहीं हो पाया कि रोग क्या है? बेचैनी बढ़ती जा रही थी क्योंकि दर्द असहनीय था। उन्हें भक्तामर स्तोत्र पर अटूट श्रद्धा है अतः उस समय भी उन्होंने एक कटोरी पानी को सामने रखकर पूरा भक्तामर स्तोत्र पढ़ा और मंत्रित जल पीकर वे लेट गईं। अपने पति और बच्चों को समझाने लगीं कि ''मेरे समक्ष कोई मत रोना, अच्छी तरह णमोकार मंत्र सुनाते हुए मेरी समाधि कराना।''

णमोकार मंत्र सुनते-सुनते लगभग 10 दिनों के बाद उन्हें कुछ नींद

सी आ गई, सभी लोग चिंतित थे कि कहीं कोई अप्रिय घटना न घट जाए किन्तु एक घण्टे बाद श्रीमती जी ने आँख खोलकर शौच के लिए जाने की इच्छा व्यक्त की। वहाँ से आकर वे अच्छी तरह से बातें करने लगीं और बोलीं कि मेरे पेट में दर्द बिल्कुल खत्म हो गया। डॉ. साहब को बुलाया गया तब उन्होंने श्रीमती का पेट देखकर आश्चर्यपूर्वक कहा- अरे! इनके पेट में बहुत बड़ा फोड़ा था, वह अब फूट गया है। ईश्वरीय कृपा और बच्चों के भाग्य ने इन्हें इतने बड़े संकट से बचा लिया। हमें तो इसे ठीक करने के लिए बहुत बड़ा आपरेशन करना पड़ता। अंत में मामूली इलाज के पश्चात् वे पूर्ण स्वस्थ होकर पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के दर्शनार्थ दिल्ली आईं और इस घटनाचक्र को बताते हुए कहने लगीं-''माताजी! मैंने भक्तामर स्तोत्र के प्रभाव से नवजीवन प्राप्त किया है, मुझे आशीर्वाद दीजिए ताकि मेरी धर्म के प्रति हमेशा अडिग श्रद्धा बनी रहे।''

पूज्य माताजी ने उन्हें धर्मवृद्धि आशीर्वाद प्रदान किया। बहराइच जैन समाज के बहुत सारे स्त्री पुरुषों ने इस आश्चर्यजनक अतिशय को प्रत्यक्ष देखा और श्रीमती जी के धैर्य की सराहना की। इसी प्रकार से टिकैतनगर-बाराबंकी के स्व.श्री प्रकाशचंद जी (मेरे गृहस्थावस्था के भाई) को एक बार पेट में भयंकर दर्द होते ही उन्होंने भी भक्तामर स्तोत्र से मंत्रित जल पीकर नया जीवन प्राप्त किया। यह तो मात्र एक घटना मैंने यहाँ लिखी है ऐसे न जाने कितने प्राणी भक्तामर के चमत्कार का अनुभव करते हैं। इन अनुभवों से यह सिद्ध होता है कि जिस स्तोत्र के प्रभाव से श्रीमानतुंगाचार्य के कारावास के 48 ताले टूट गये थे उससे ऐसे छोटे-छोटे चमत्कार हो जावें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

वैसे तो भक्तामर स्तोत्र, पूजन, विधान आदि की बहुत सारी पुस्तकें अनेकों स्थानों से प्रकाशित हो चुकी हैं किन्तु यह पुस्तक उन

समस्त पुस्तकों से कुछ भिन्नता को लिए हुए है। स्व. श्री अमर चन्द जैन होमब्रेड मेरठ वालों ने एक दिन पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के पास आकर निवेदन किया कि ''मैं भक्तामर मण्डल विधान की एक ऐसी पुस्तक प्रकाशित करना चाहता हूँ जिसमें हिन्दी में सुन्दर छंद में भक्तामर पूजा हो और संस्कृत तथा हिन्दी काव्यों सहित 48 अर्घ्य हों।'' उनके निवेदन को स्वीकार कर पूज्य माताजी ने मुझे हिन्दी की भक्तामर पूजा बनाने का तथा पुस्तक की सेंटिंग करने का आदेश दिया।

दिनाँक 8 अप्रैल 1991, वैशाख कृ.9 को मैंने गुरु आज्ञानुसार भगवान ऋषभदेव को हृदय में स्मरण करके भक्तामर पूजा की रचना प्रारंभ की, दूसरे ही दिन वह रचना पूर्ण हुई। भक्ति के शुष्क प्रसून मैंने इसमें पिरोए हैं क्योंकि असीम अतिशय युक्त भक्तामर स्तोत्र का माहात्म्य मुझ जैसे अल्पबुद्धि कैसे कर सकते हैं?

इनके अघ्यों में एक-एक छंद मूल संस्कृत भक्तामर के दिए गए हैं तथा उसी के नीचे पं. श्री हेमराज कृत हिन्दी भक्तामर के एक-एक पद्य हैं, जिनके द्वारा संस्कृत भाषा नहीं जानने वाले लोग भी अर्थ को अच्छी तरह समझ सकते हैं। अर्घ्य के मंत्रों में बहुत विविधता देखने को मिली। सभी पुस्तकों में थोड़ा-थोड़ा अन्तर देखा गया अतः मैंने वकीलपुरा-दिल्ली से प्रकाशित ''सचित्र भक्तामर रहस्य'' नामक पुस्तक के आधार से अर्घ्य के 48 मंत्र लिए हैं क्योंकि उसमें भक्तामर मण्डल विधान के प्रारंभ में ''श्रीमन्महामुनि सोमसेन प्रणीता'' देखकर प्रामाणिकता का आभास हुआ। अन्यत्र कहीं रचयिता के नाम नहीं दिए हैं।

48 अर्घ्य के पश्चात् 48 ऋद्धिमंत्रों के अर्घ्य भी दिये गये हैं। क्योंकि उसी मण्डल पर इन ऋद्धि मंत्रों के अर्घ्य भी चढ़ाने की परम्परा

देखी जाती है, ये ऋद्धिमंत्र श्री गौतम स्वामी द्वारा रचित हैं और 'गणधरवलय मंत्र' नाम से प्रसिद्ध हैं। अंत में जाप्य मंत्र और जयमाला है। इस प्रकार यह लघु भक्तामर पूजन विधान कभी भी मात्र दो घण्टे के अल्प समय में सम्पन्न किया जा सकता है। यदि 48 दिन तक लगातार इस विधान को प्रतिदिन करें तो निश्चित ही मनवांछित फल की प्राप्ति होगी।

लोकप्रिय काव्य-भक्तामर स्तोत्र

–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

जैन परम्परा में काव्य पाठों की श्रृँखला में भक्तामर स्तोत्र का सर्वोपरि स्थान है। संस्कृत भाषा में होते हुए भी सर्वजन प्रिय है। हजारों-लाखों की संख्या में स्त्री-पुरुष, युवा, बालक इस स्तोत्र का नियमित पाठ करते हैं। भक्तामर के अखण्ड पाठ कराने की अभिरुचि के कारण अनेक नगरों व शहरों में अधिकाधिक दिनों तक अखण्ड पाठ करने की होड़ सी लगी रहती है।

यह स्तोत्र केवल काव्य ही नहीं है अपितु मंत्रों का खजाना है। एक-एक श्लोक मंत्रों के समान कार्यकारी है। इसका पारायण अनेक प्रकार की ऋद्धि-सिद्धियों को प्रदान करता है। सबसे अधिक पद्यानुवाद इसी स्तोत्र के हुए हैं व होते जा रहे हैं। प्रत्येक श्लोकों का रंग-बिरंगे चित्रों के साथ भी प्रकाशन हुआ है।

अब से 50 वर्ष पूर्व जिन नर-नारियों को अक्षर ज्ञान भी नहीं था, वे भी भक्तामर का पाठ सुने बिना अन्न जल ग्रहण नहीं करते थे, अब भी अनेक लोग इस स्तोत्र का पाठ पढ़कर ही जलपान लेते हैं। अनेक संस्थाओं तथा कलाकारों ने इसे अत्यंत मधुर कंठ से संगीत स्वरों में आडियो कैसेट तथा श्लोकों के अनुरूप नृत्य के माध्यम से भाव-भंगिमा को प्रदर्शित करते हुए विडियो कैसेट बनाए हैं।

आशा है ''भक्तामर स्तोत्र'' का माहात्म्य जानते हुए भक्तगण इस भक्तामर मण्डल विधान को करके लाभान्वित होंगे तथा पुण्य अर्जित करेंगे।

प्रथम तीर्थंकर

भगवान ऋषभदेव जीवन दर्शन

–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

आज से करोड़ों वर्ष पूर्व प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का जन्म भारतवर्ष के उत्तरप्रदेश की अयोध्यानगरी के महाराजा नाभिराय की महारानी मरुदेवी की पवित्र कुक्षि से चैत्र कृष्णा नवमी को हुआ। क्षत्रियवर्णी, काश्यपगोत्रीय, इक्ष्वाकुवंशी, तप्त स्वर्ण सदृश, बैल चिन्ह से युक्त उन तीर्थंकर भगवान की शरीर की अवगाहना दो हजार हाथ एवं आयु चौरासी लाख पूर्व वर्ष की थी। भगवान ऋषभदेव ने कर्मभूमि की आदि में प्रजा को असि, मसि आदि षट्क्रियाओं द्वारा जीवन जीने की कला सिखाई थी। सम्पूर्ण विद्याओं और कलाओं के जनक भगवान ऋषभदेव ने चैत्र कृष्णा नवमी की शुभ तिथि में प्रयाग में वटवृक्ष के नीचे जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर घोर तपश्चरण किया पुनः मुनि परम्परा को जीवन्त करने हेतु आहारार्थ निकले। 1 वर्ष 39 दिन के पश्चात् उनका प्रथम आहार हस्तिनापुर के राजा श्रेयांस के यहाँ इक्षुरस का हुआ। प्रयाग के पुरिमतालपुर उद्यान में वटवृक्ष के नीचे फाल्गुन कृष्णा ग्यारस को उन्हें दिव्यकेवलज्ञान की प्राप्ति हुई, उनके समवसरण में श्री वृषभसेन आदि 84 गणधर, 84 हजार मुनि, गणिनी ब्राह्मी आर्यिका सहित 350000 आर्यिकाएं, 3 लाख श्रावक, 5 लाख श्राविकाएँ थे। उनके जिनशासन यक्ष गोमुख देव एवं यक्षी चक्रेश्वरी देवी हैं। आयु के अंत में उन्होंने माघ कृष्णा चौदस को कैलाशपर्वत से मोक्ष प्राप्त किया।

चौबीसवें तीर्थंकर
भगवान महावीर का जीवन दर्शन

–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

वर्तमान से 2605 वर्ष पूर्व चौबीसवें एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म भारतवर्ष के बिहार प्रांत में जिला नालंदा की कुण्डलपुर नगरी में महाराजा सिद्धार्थ की महारानी त्रिशला की पवित्र कुक्षि से चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की पवित्र तिथि में हुआ। क्षत्रियवर्णी, काश्यपगोत्रीय, नाथवंशी, तप्त स्वर्ण सदृश, सिंह चिन्ह से युक्त उन तीर्थंकर भगवान के शरीर की अवगाहना सात हाथ एवं आयु 72 वर्ष की थी। 30 वर्ष की उम्र में अखण्ड ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करने वाले भगवान महावीर ने षण्डवन में सालवृक्ष के नीचे मगशिर कृष्णा दशमी तिथि में दीक्षा ग्रहण की। उनका प्रथम आहार कूल ग्राम के राजा वकुल के द्वारा खीर का हुआ तथा विशेष आहार कौशाम्बी में महासती चंदना द्वारा खीर का हुआ। भगवान महावीर को दिव्य केवलज्ञान की प्राप्ति ज्ञातृषण्डवन में वैशाख शुक्ल दशमी को ऋजुकूला नदी के तट पर हुई, उनके समवसरण में श्री इन्द्रभूति आदि 11 गणधर, 14 हजार मुनि, गणिनी आर्यिका चन्दना सहित छत्तीस हजार आर्यिकाएँ, 1 लाख श्रावक व 3 लाख श्राविकाएं थीं। उनकी दिव्यध्वनि श्रावण कृष्णा एकम को खिरी और कार्तिक कृष्णा अमावस्या को आज से 2532 वर्ष पूर्व बिहार प्रान्त स्थित पावापुरी से मोक्ष पद प्राप्त किया।

भगवान महावीर के वीर, वर्द्धमान, महावीर, सन्मति, अतिवीर ये पाँच नाम प्रसिद्ध हैं।

चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों की नामावली

महानुभावों,

अपने नगर के जिनमंदिरों में चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों के नाम निम्नानुसार लिखवाएं अथवा शिलापट्ट लगवाएं एवं इन तीर्थों की यात्रा करके पुण्यलाभ प्राप्त करें।

प्रेरणा-गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी

तीर्थंकर जन्मभूमि	तीर्थंकरों के नाम
1. अयोध्या (फैजाबाद-उ.प्र.)	-श्री ऋषभदेव भगवान
	-श्री अजितनाथ भगवान
	-श्री अभिनंदननाथ भगवान
	-श्री सुमतिनाथ भगवान
	-श्री अनंतनाथ भगवान
2. श्रावस्ती (बहराइच-उ.प्र.)	-श्री संभवनाथ भगवान
3. कौशाम्बी (उ.प्र.)	-श्री पद्मप्रभु भगवान
4. वाराणसी (उ.प्र.)	-श्री सुपार्श्वनाथ भगवान
	-श्री पार्श्वनाथ भगवान
5. चन्द्रपुरी (वाराणसी) उ.प्र.	-श्री चन्द्रप्रभु भगवान
6. काकन्दी (देवरिया नि.-गोरखपुर) उ.प्र.	-श्री पुष्पदंतनाथ भगवान
7. भद्रिकापुरी	-श्री शीतलनाथ भगवान
8. सिंहपुरी (सारनाथ) उ.प्र.	-श्री श्रेयांसनाथ भगवान
9. चम्पापुरी (भागलपुर-बिहार)	-श्री वासुपूज्यनाथ भगवान
10. कम्पिलपुरी (फर्रूक्खाबाद-उ.प्र.)	-श्री विमलनाथ भगवान

11. रत्नपुरी (फैजाबाद-उ.प्र.)	-श्री धर्मनाथ भगवान
12. हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.)	-श्री शांतिनाथ भगवान
	-श्री कुन्थुनाथ भगवान
	-श्री अरनाथ भगवान
13. मिथिलापुरी	-श्री मल्लिनाथ भगवान
	-श्री नमिनाथ भगवान
14. राजगृही (नालंदा-बिहार)	-श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान
15. शौरीपुर (बटेश्वर-उ.प्र.)	-श्री नेमिनाथ भगवान
16. कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार)	-श्री महावीर भगवान

विशेष-ज्ञातव्य है कि पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से स्थापित अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी द्वारा तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों के विकास का क्रम सफलतापूर्वक जारी है। इस क्रम में हस्तिनापुर, अयोध्या, कुण्डलपुर (नालंदा), राजगृही, सिंहपुरी (सारनाथ) में सुन्दर निर्माण एवं विकास के कार्य सम्पन्न हुए हैं, जिससे कि प्राचीन तीर्थभूमियाँ प्रकाश में आई हैं तथा उनका राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार हुआ है। इसी क्रम में वर्तमान में भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकंदी का भी निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। आप भी अपने आसपास के क्षेत्र में स्थित तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास हेतु समाज में जागरुकता पैदा करें एवं संगठित होकर उन प्राचीन तीर्थभूमियों का जीर्णोद्धार करें। इस कार्य में हम सदैव आपके साथ हैं।

निवेदक - **अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी**

अध्यक्ष - **कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी**

प्रधान कार्यालय - **जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.**
फोन नं.-01233-280184, 292943

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 400 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर

(नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्मित 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम, ग्वालियर में चिन्तामणि पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा – पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा – 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा – जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) आचार्य श्री शांतिसागर सम्मेद शिखर ज्योति रथ (2014) भगवान ऋषभदेव विश्वशांति कलश यात्रा रथ-मांगीतुंगी (2015) के दो रथों का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं-

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रतिवर्ष लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है-कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस तीर्थंकर मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

12. गणिनी ज्ञानमती दिगम्बर जैन पत्राचार परीक्षा केन्द्र का संचालन।

13. इंटरनेट पर जैनधर्म के इन्साइक्लोपीडिया (www.encyclopediaofjainism. com) का निर्माण।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ तथा महावीर जी अतिशय क्षेत्र के महावीर धाम परिसर में निर्मित पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर का संचालन होता है। वर्तमान में इस संस्थान के अन्तर्गत सम्मेदशिखर जी तीर्थ पर ''आचार्य श्री शांतिसागर धाम'' का निर्माण प्रारंभ किया जा रहा है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., श्री अमरचंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)
20. श्रीमती शशि जैन ध.प. श्री दिनेशचंद जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
21. श्रीमती आदर्श जैन ध.प. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
22. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)।
23. श्री देवेन्द्र कुमार जैन पुत्र स्व. श्री कुन्थलाल जैन (दरियाबाद निवासी) रमेश पार्क, लक्ष्मीनगर, दिल्ली।

श्री भक्तामर विधान प्रारंभ

–मंगलाचरण–

शेरछंद – जय जय प्रथम तीर्थेश की मैं वंदना करूँ।
जय जय प्रभो वृषभेश की मैं अर्चना करूँ।।
जय जय जगत जिनेश से अभ्यर्थना करूँ।
मैं कर्मशत्रु जीत के मुक्त्यंगना वरूँ।।1।।

इस कर्मभूमि में प्रथम अवतार लिया था।
षट्कर्म बताकर जगत् उद्धार किया था।।
स्वयमेव तो भव भोग से विरक्त हो गए।
शाश्वत निजात्म ध्यान में निमग्न हो गए।।2।।

उनका ही यशोगान आज भक्त कर रहे।
स्तोत्र के माध्यम से कंठ शुद्ध कर रहे।।
आचार्य मानतुंग की अमर हुई कृती।
जिस पाठ भक्तामर से की आदीश संस्तुती।।3।।

राजा ने बेड़ियों में मुनी को जकड़ दिया।
मुनिवर ने तभी आदिनाथ संस्तवन किया।।
कलिकाल में भी कैसा चमत्कार हुआ था।
जिनदेव की भक्ती से बेड़ा पार हुआ था।।4।।

स्वयमेव बेड़ियों से मुक्त देखकर सभी।
आश्चर्यचकित हो गए राजा प्रजा सभी।।
नृप ने तभी मुनिवर से क्षमायाचना किया।
मुनिवर ने भक्तामर का सार भी बता दिया।।5।।

यह देशना मिली सदा जिनदेव को भजो।
सम्यक्त्व को धारण करो मिथ्यात्व को तजो।।
तब लोहशृंखला भी पुष्पहार बनेगी।
जिनभक्ति ही निजज्ञान का भंडार भरेगी।।6।।

पूजा हो भक्तामर की बड़े भक्तिभाव से।
करते अखण्ड पाठ भी समकित प्रभाव से।।
माहात्म्य भक्तामर का आज भी प्रसिद्ध है।
श्रद्धा से जो पढ़ ले इसे सब कार्यसिद्ध हैं।।7।।

।। इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री भक्तामर पूजा

–स्थापना–

अर्चन करो रे,
श्री आदिनाथ के चरण कमल का, अर्चन करो रे।
अर्चन करो, पूजन करो, वंदन करो रे,
श्री ऋषभदेव के चरण कमल में, वन्दन करो रे।।
भक्त अमर भी जिन चरणों में, आकर शीश झुकाते हैं।
निज मुकुटों की मणियों से, अद्भुत प्रकाश फैलाते हैं।।
युग के प्रथम जिनेश्वर की वे, पूजा करने आते हैं।
हम भी आह्वानन स्थापन, सन्निधिकरण रचाते हैं।
सन्निधिकरण रचाते हैं।
अर्चन करो रे,
श्री आदिनाथ के चरण कमल का, अर्चन करो रे।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिन् श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिन् श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिन् श्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक–

तर्ज –नाम तिहारा तारनहारा.....

युग के प्रथम जिनेश्वर को हम, शत-शत वन्दन करते हैं।
भक्तामर के अधिनायक, प्रभु का हम अर्चन करते हैं।।

प्रभु के जन्म कल्याणक में, इन्द्रों ने न्हवन रचाया था।
क्षीरोदधि का पावन जल, जन्माभिषेक में आया था।।
पूजक के जन्मादि रोग भी, नाश प्रभू वे करते हैं।
भक्तामर के अधिनायक प्रभु, का हम अर्चन करते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिने श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य सुगंधित द्रव्यों से, शचि ने प्रभु को महकाया था।
उनकी अतुलित काया ने तो, सारा जग महकाया था।।
भव आताप शमन हेतू हम, गन्ध विलेपन करते हैं।
भक्तामर के अधिनायक प्रभु, का हम अर्चन करते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिने श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में रहकर जग के वैभव, में भव को नहिं बिता दिया।
नीलांजना का नृत्य देखते, ही मन में वैराग्य हुआ।।
अक्षय पद को प्राप्त प्रभू को, हम अक्षत से जजते हैं।
भक्तामर के अधिनायक प्रभु, का हम अर्चन करते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिने श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के पद तल स्वर्णकमल की, रचना इन्द्र रचाते हैं।
लेकिन कमल पुष्प के ऊपर, प्रभु के चरण न आते हैं।।
विषयवासना शमन हेतु हम, पुष्प समर्पण करते हैं।
भक्तामर के अधिनायक प्रभु, का हम अर्चन करते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिने श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य भोज्य सामग्री प्रभु की, स्वर्गलोक से आती है।
दीक्षा के पश्चात् प्रभू की, जिनचर्या कहलाती है।।
प्रभु सम भोजन प्राप्ति हेतु, नैवेद्य समर्पण करते हैं।
भक्तामर के अधिनायक प्रभु, का हम अर्चन करते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिने श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की केवलज्ञान ज्योति से, जले असंख्यों दीप जहाँ।
मेरा इक छोटा सा दीपक, कर न सके सामीप्य वहाँ।।
फिर भी भक्त पुजारी दीपक, ले तव आरति करते हैं।
भक्तामर के अधिनायक प्रभु, का हम अर्चन करते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिने श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

विषय भोग में धूप जलाने, से कर्मों का बंध कहा।
प्रभु के सम्मुख धूप जलाते, जल जाते हैं कर्म महा।।
अग्निघटों में धूप जलाकर, प्रभु का पूजन करते हैं।
भक्तामर के अधिनायक प्रभु, का हम अर्चन करते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिने श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कई भवों की पुण्य प्रकृतियों, से तीर्थंकर पद पाया।
आदिपुरुष आदीश रूप में, जग ने तुमको अपनाया।।
भक्त इसी फल की आशा ले, फल से पूजन करते हैं।
भक्तामर के अधिनायक प्रभु, का हम अर्चन करते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिने श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा सिद्धशिला पर, जा प्रभु ने विश्राम किया।
अष्टकर्म को नष्ट किया, अष्टापद से निर्वाण लिया।।
अष्टद्रव्य युत स्वर्णथाल प्रभु, पद में अर्पण करते हैं।
भक्तामर के अधिनायक प्रभु, का हम अर्चन करते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिने श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज –हे दीनबंधु.....

प्रभु तेरे ज्ञान की अजस्र धार जो बही।
उससे पवित्र हो गई युगादि में मही।।
उस ज्ञान की इच्छा से ही जलधार मैं करूँ।
भक्तामराधिपति का दिव्यज्ञान मैं भरूँ।।1।।

शांतये शांतिधारा।

प्रभु पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य से सहित हुए।
उस दिव्य पुष्पवृष्टि से प्रभु जगप्रथित हुए।।
सुरपुष्पवृष्टिप्रातिहार्य को भी मैं वरूँ।
पुष्पों की अंजली से पुष्पवृष्टि मैं करूँ।।2।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

(मण्डल के ऊपर पुष्पांजलि करें।)

भक्तामर स्तोत्र अर्घावली

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित-पाप-तमो-वितानम्।
सम्यक्प्रणम्य जिन-पाद-युगं युगादा-
वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम् ।।1।।

आदिपुरुष आदीश जिन, आदि सुविधि करतार।
धरम धुरन्धर परम गुरु, नमों आदि अवतार।।
सुरनत-मुकुट रतन छवि करें, अन्तर पाप तिमिर सब हरें।
जिनपद वन्दों मनवचकाय, भवजल पतित-उधरन सहाय।।

ॐ ह्रीं प्रणतदेवसमूह मुकुटाग्रमणिद्योतकाय महापापान्धकार विनाशनाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय-तत्त्वबोधा-
दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुरलोक-नाथैः।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितय-चित्त-हरै-रुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ।।2।।

श्रुत-पारग-इन्द्रादिक देव, जाकी थुति कीनी कर सेव।
शब्द मनोहर अरथ विशाल, तिस प्रभु की वरनों गुनमाल।।

ॐ ह्रीं गणधर-चारणसमस्त-ऋषीन्द्र-चन्द्रादित्य-सुरेन्द्र-नरेन्द्र-व्यंतरेन्द्र-नागेन्द्र-चतुर्विध मुनीन्द्रस्तुत चरणारविंदाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित-पाद-पीठ,
स्तोतुं समुद्यत-मतिर्विगत-त्रपोऽहम्।

बालं विहाय जल-संस्थित-मिन्दु-बिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम।।3।।

विबुध-वंद्यपद! मैं मति-हीन, हो निलज्ज थुति मनसा कीन।
जल-प्रतिबिम्ब बुद्ध को गहै:, शशिमण्डल बालक ही चहै।।

ॐ ह्रीं विगतबुद्धि गर्वापहार सहित श्रीमन्मानतुंगाचार्य भक्तिसहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

वक्तुं गुणान् गुण-समुद्र शशांक-कान्तान्,
कस्ते क्षमः सुर-गुरु-प्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-नक्र-चक्रं,
को वा तरीतु-मलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम्।।4।।

गुनसमुद्र तुम गुन अविकार, कहत न सुरगुरु पावें पार।
प्रलय पवन उद्धत जलजन्तु, जलधि तिरै को भुज बलवन्तु।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनगुणसमुद्र चन्द्रकान्तिमणितेजशरीर समस्त-सुरनाथस्तुत श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

सोऽहं तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश,
कर्तुं स्तवं विगत-शक्ति-रपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्म-वीर्य-मविचार्य्य मृगी मृगेन्द्रं,
नाऽभ्येति किं निज-शिशोः परि-पालनार्थम्।।5।।

सो मैं शक्तिहीन थुति करूँ, भक्तिभाववश कछु नहिं डरूँ।
ज्यों मृगि निज सुत पालन हेत, मृगपति सन्मुख जाय अचेत।।

ॐ ह्रीं समस्तगणधरादि-मुनिवरप्रतिपालक मृगबालवत् श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास - धाम,
त्वद्भक्ति-रेव-मुखरी-कुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र-चारु-कलिका-निकरैक-हेतु।।6।।

मैं शठ सुधी-हंसन को धाम, मुझ तुव भक्ति बुलावै राम।
ज्यों पिक अम्ब-कली परभाव, मधु ऋतु मधुर करै आराव।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रचन्द्रभक्ति सर्वसौख्य तुच्छभक्ति बहुसुखदायकाय जिनेन्द्राय जिनादिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

त्वत्संस्तवेन भव-सन्तति-सन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षय-मुपैति शरीर-भाजाम् ।
आक्रान्त-लोक-मलिनील-मशेष-माशु,
सूर्यांशु-भिन्न-मिव शार्वर-मन्धकारम् ।।7।।

तुम जस जंपत जन छिनमाहिं, जनम जनम के पाप नशाहिं।
ज्यों रवि उगै फटै तत्काल, अलिवत् नील निशा-तम-जाल।।

ॐ ह्रीं अनंतभव-पातक सर्व विनाशकाय तवस्तुति सौख्यदायकाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु,
मुक्ताफल-द्युति-मुपैति ननूद-बिंदुः।।8।।

तुव प्रभावतैं कहूँ विचार, होती यह थुति जन-मनहार।
ज्यों जल कमल पत्र पै परै, मुक्ताफल की द्युति विस्तरै।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रस्तवन सत्पुरुष चिच्चमत्काराय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

आस्तां तव स्तवन-मस्त-समस्त-दोषं,
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्र-किरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकास-भांजि।।9।।

तुम गुन महिमा हत दुख-दोष, सो तो दूर रहो सुखपोष।
पाप विनाशक है तुम नाम, कमल विकासी ज्यों रविधाम।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनपूजन-स्तवन-कथाश्रवणेन जगत्त्रयभव्यजीव समस्तपापौघविनाशनाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

नात्यद्भुतं भुवन - भूषण - भूतनाथ,
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्त - मभिष्टु - वन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति।।10।।

नहिं अचंभ जो होंहिं तुरंत, तुमसे तुम गुण वरणत सन्त।
जो अधीन को आप समान, करैं न सो निन्दित धनवान।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यानुपमगुणमंडित समस्तोपमासहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

दृष्ट्वा भवन्त-मनिमेष-विलोकनीयं,
नान्यत्र तोष-मुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्त्वा पयः शशिकर-द्युति-दुग्ध-सिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधेरसितुं क इच्छेत् ।।11।।

इक टक जन तुमको अविलोय, अवरविषै रति करे न सोय।
को करि क्षीरजलधि जलपान, क्षार नीर पीवै मतिमान।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदर्शन अनंतभवसंचित अघसमूहविनाशनाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणु-भिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रि - भुवनैक - ललाम - भूत।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समान-मपरं न हि रूपमस्ति।।2।।

प्रभु तुम वीतराग गुणलीन, जिन परमाणु देह तुम कीन।
हैं जितने ही ते परमाणु, यातै तुम सम रूप न आनु।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनशान्तिस्वरूपगुण त्रिभुवनतिलकाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरगनेत्र-हारि,
निःशेष-निर्जित-जगत्त्रित-योपमानम्।
बिम्बं कलंक-मलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डु-पलाश-कल्पम् ।।13।।

कहं तुम मुख अनुपम अविकार, सुरनरनागनयनमनहार।
कहाँ चन्द्र-मंडल सकलंक, दिन में ढाक पत्र सम रंक।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यविजयी रूपातिशय अनंतचन्द्रतेजोजितृ सदातेज-पुंजायमान श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

सम्पूर्ण-मण्डल-शशांक-कला कलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर - नाथमेकं,
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ।।14।।

पूरन चंद जोति छविवंत, तुम गुन तीन जगत लंघंत।
एक नाथ त्रिभुवन आधार, तिन विचरत को करै निवार।।

ॐ ह्रीं शुभ्रगुणातिशयरूप त्रिभुवन जिनजिनेन्द्रगुण विराजमानाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि-
र्नीतं मनागपि मनो न विकार-मार्गम्।
कल्पान्त-काल-मरुता चलिता-चलेन,
किं मन्दराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित्।।15।।

जो सुरतिय विभ्रम आरम्भ, मन न डिग्यो तुम तो न अचम्भ।
अचल चलावै, प्रलय समीर, मेरु शिखर डगमगै न धीर।।

ॐ ह्रीं मेरुवद्अचल शीलशिरोमणये चतुर्विधवनिताविकाररहित शीलसमुद्राय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

निर्धूम - वर्त्ति - रपवर्जित - तैलपूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटी-करोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिता-चलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः।।16।।

धूमरहित बातीगतनेह, परकाशै त्रिभुवनघर एह।
वात-गम्य नाहीं परचण्ड, अपर दीप तुम बलो अखण्ड।।

ॐ ह्रीं धूमस्नेहवर्त्यादिविघ्नरहित त्रैलोक्य परमकेवलदीपकाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहु-गम्यः,
स्पष्टी-करोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भोधरोदर - निरुद्ध - महा - प्रभावः,
सूर्यातिशायि-महिमासि मुनीन्द्र लोके।।17।।

छिपहु न लुपहु राहु की छांहि, जग-परकाशक हो छिन मांहि।
घन-अनवर्त दाह विनिवार, रवि तैं अधिक धरो गुणसार।।

ॐ ह्रीं राहुचन्द्रपूजित निरावरणज्योतिरूप लोकालोकित सदोदयाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

नित्योदयं दलित-मोह-महान्धकारं।
गम्यं न राहु-वदनस्य न वारिदानाम्।।
विभ्राजते तव मुखाब्ज-मनल्प-कान्ति,
विद्योतयज्-जगदपूर्व-शशांक-बिम्बम्।।18।।

सदा उदित विदलित मनमोह, विघटित मेघ राहु-अवरोह।
तुम मुख कमल अपूरब चन्द, जगत विकाशी जोति अमन्द।।

ॐ ह्रीं नित्योदयरूप अगम्य राहु त्रिभुवनसर्वकलासहित विराजमानाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

किं शर्वरीषु शशिनान्हि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दु-दलितेषु तमःसु नाथ।
निष्पन्न-शालि-वन-शालिनि जीव-लोके,
कार्यं कियज्-जलधरैर्जल-भारनम्रैः।।19।।

निशदिन शशि रविको नहिं काम, तुम मुखचन्द हरै तम धाम।
जो स्वभावतैं उपजे नाज, सजल मेघ तैं कौनहु काज।।

ॐ ह्रीं चन्द्रसूर्योदयास्त रजनी-दिवारहित परमकेवलोदय सदा दीप्तिविराजमानाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरि - हरादिषु नायकेषु।
तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काच-शकले किरणा-कुलेऽपि।।20।।

जो सुबोध सोहे तुम मांहि, हरि हर आदिक में सो नाहिं।
जो द्युति महा रतन में होहि, काँच खण्ड पावै नहिं सोय।।

ॐ ह्रीं हरिहरादिज्ञानरहित परमज्योतिकेवलज्ञानसहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

मन्ये वरं हरि - हरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि।।21।।

सराग देव देख मैं भला विशेष मानिया,
स्वरूप जाहि देख वीतराग तू पिछानिया।
कछू न तोहि देख के जहाँ तुही विशेखिया,
मनोग चित्त चोर और भूल हू न पेखिया।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनमनोमोहन जिनेन्द्ररूपान्यदृष्टान्तरहित परम मंडिताय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्-
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मिं,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुर-दंशु-जालम् ।।22।।

अनेक पुत्रवंतिनी नितम्बिनी सपूत हैं,
न तो समान पुत्र और मात तैं प्रसूत हैं।।
दिशा धरंत तारिका अनेक कोटि को गिनै,
दिनेश तेजवन्त एक पूर्व ही दिशा जनै।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनवरमाताजनित जिनेन्द्रपूर्वदिग्भास्कर केवलज्ञान भास्कराय श्रीआदिब्रह्मजिनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

त्वामा-मनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य-वर्ण-ममलं तमसः पुरस्तात्
त्वामेव सम्य-गुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिव-पदस्य मुनीन्द्र पन्थाः।।23।।

पुरान हो पुमान हो पुनीत पुण्यवान हो,
कहैं मुनीश अंधकार नाश को सुभान हो।
महंत तोहि जानि के न होय वश्य काल के,
न और कोइ मोख पन्थ देय तोहि टाल के।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यपावनादित्यवर्ण परमअष्टोत्तरशतलक्षण नवशत व्यंजनाय समुदाय एकसहस्रअष्टमंडिताय श्रीआदिजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

त्वा-मव्ययं विभु-मचिन्त्य-मसंख्य-माद्यं,
ब्रह्माण-मीश्वर-मनन्त-मनंग केतुम्।
योगीश्वरं विदित-योग-मनेक-मेकं,
ज्ञान-स्वरूप-ममलं प्रवदन्ति सन्तः।।24।।
अनन्त नित्य चित्त के अगम्य रम्य आदि हो,
असंख्य सर्वव्यापि विष्णु ब्रह्म हो अनादि हो।
महेश कामकेतु योग-ईश योग ज्ञान हो,
अनेक एक ज्ञानरूप शुद्ध सन्त-मान हो।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मा-विष्णु-श्रीकंठ-गणपति त्रिभुवनदेवत्वसहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधा-
त्त्वं शंकरोऽसि भुवन-त्रय-शंकरत्वात् ।
धातासि धीर शिव-मार्ग-विधे-र्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमो सि।।25।।
तुही जिनेश बुद्ध है सुबुद्धि के प्रमानतैं,
तुही जिनेश शंकरो जगत्त्रयी विधानतैं।

तुही विधात है सही सुमोख पंथ धारतैं,
नरोत्तमो तुही प्रसिद्ध अर्थ के विचारतैं।।

ॐ ह्रीं बुद्धशंकरशेषधरब्रह्मानाम् सहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

तुभ्यं नम-स्त्रिभुवनार्ति-हराय नाथ,
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल-भूषणाय।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन भवोदधि-शोषणाय।।26।।
नमों करूँ जिनेश तोहि आपदा-निवार हो,
नमों करूँ सुभूरि भूमि-लोक के सिंगार हो।
नमों करूँ भवाब्धि-नीर-राशि-शोष हेतु हो,
नमों करूँ महेश तोहि मोखपंथ देतु हो।।

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोक-ऊर्ध्वलोकत्रय कृताहोरात्रिनमस्कार समस्तार्तरौद्रविनाशक त्रिभुवनेश्वराय भवदधितरणतारणसमर्थाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाश-तया मुनीश।
दोषै-रुपात्त-विविधाश्रय-जात-गर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिद-पीक्षितोसि।।27।।
तुम जिन पूरण गुणगण भरे, दोष गर्व करि तुम परिहरे।
और देवगण आश्रय पाय, स्वप्न न देखे तुम फिर आय।।

ॐ ह्रीं श्री परमगुणाश्रितावगुणानाश्रित श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

उच्चैर-शोक-तरु-संश्रित-मुन्मयूख-
माभाति रूप-ममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत्-किरणमस्त-तमो-वितानं,
बिम्बं रवेरिव पयोधर - पार्श्ववर्ति।।28।।

तरु अशोक तल किरण उदार, तुम तन शोभित है अविकार।
मेघ-निकट ज्यों तेज फुरंत, दिनकर दिपै तिमिर निहनंत।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्ष प्रातिहार्यसहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनका-वदातम् ।
बिम्बं वियद्-विलस-दंशु-लता-वितानं,
तुंगोदयाद्रि - शिरसीव सहस्र - रश्मेः।।29।।

सिंहासन मणि किरण विचित्र, तापर कंचन वरण पवित्र।
तुम तन शोभित किरण विथार, ज्यों उदयाचल रवि तमहार।।

ॐ ह्रीं सिंहासन प्रातिहार्यसहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

कुन्दावदात-चल-चामर-चारु-शोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम्।
उद्यच्छशांक-शुचि-निर्झर-वारि-धार-
मुच्चैस्तटं सुर-गिरेरिव शात-कौम्भम् ।।30।।

कुन्द पुहुप सित-चमर ढुरंत, कनक-वरन तुम तन शोभंत।
ज्यों सुमेरु तट निर्मल कांति, झरना झरै नीर उमगांति।।

ॐ ह्रीं श्री चतुःषष्टिचामर प्रातिहार्यसहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।। 30।।

छत्र-त्रयं तव विभाति शशांक-कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानु-कर-प्रतापम्।
मुक्ता-फल-प्रकर-जाल-विवृद्ध-शोभं,
प्रख्यापयत्-त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्।।31।।

ऊँचे रहैं सूर-दुति लोप, तीन छत्र तुम दिपै अगोप।
तीन लोक की प्रभुता कहैं, मोती झालर सों छवि लहैं।।

ॐ ह्रीं श्री छत्रत्रयप्रातिहार्यसहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

गम्भीर-तार-रव-पूरित-दिग्विभाग-
स्त्रैलोक्य-लोक-शुभ-संगम-भूति-दक्षः।
सद्धर्म-राज-जय-घोषण-घोषकः सन्,
खे दुन्दुभिर्-ध्वनति ते यशसः प्रवादी।।32।।

दुन्दुभि शब्द गहर गंभीर, चहुँ दिश होय तुम्हारे धीर।
त्रिभुवन-जन शिव संगम करै, मानों जय जय रव उच्चरै।।

ॐ ह्रीं अष्टादशकोटिवादित्र प्रातिहार्यसहिताय श्रीपरमादि-परमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

मन्दार-सुन्दर-नमेरु-सुपारिजात,
सन्तानकादि-कुसुमोत्कर-वृष्टिरुद्धा।
गन्धोद-बिन्दु-शुभ-मन्द मरुत्प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा।।33।।

मन्द पवन गन्धोदक इष्ट, विविध कल्पतरु पुहुप सुवृष्टि।
देव करैं विकसित दल सार, मानों द्विज पंकति अवतार।।

ॐ ह्रीं समस्त पुष्पजातिवृष्टिप्रतिहार्यसहिताय श्रीपरमादि-परमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

शुम्भत्प्रभा-वलय-भूरि-विभा विभोस्ते,
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमा-क्षिपन्ती।
प्रोद्यद्दिवाकर-निरन्तर-भूरि-संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोम-सौम्याम्।।34।।

तुम तन भामण्डल जिनचंद, सब दुतिवन्त करत है मंद।
कोटि शंख रवितेज छिपाय, शशि निर्मल निशि करै अछाय।।

ॐ ह्रीं श्री कोटिभास्करप्रभामण्डित भामण्डलप्रातिहार्यसहिताय श्रीपरमादिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

स्वर्गा-पवर्ग-गममार्ग-विमार्गणेष्टः,
सद्धर्म तत्त्व-कथनैक-पटुस्-त्रिलोक्याः।
दिव्य-ध्वनिर्-भवति ते विशदार्थ-सर्व-
भाषा-स्वभाव-परिणाम-गुणैः प्रयोज्यः।।35।।

स्वर्ग मोक्ष मारग संकेत, परम धरम उपदेशन हेत।
दिव्य वचन तुम खिरैं अगाध, सब भाषा-गर्भित हितसाध।।

ॐ ह्रीं जलधरपटल गर्जित ध्वनियोजनप्रमाणप्रातिहार्यसहिताय श्रीपरमादिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

उन्निद्र - हेम - नवपंकजपुंज - कान्ती,
पर्युल्लसन्नख-मयूख-शिखा-भिरामौ।।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधा परि-कल्पयन्ति।।36।।

विकसित सुवरन कमल-दुति, नख-दुति मिलि चमकाहिं।
तुम पद पदवी जहं धरैं, तहं सुर कमल रचाहिं।।

ॐ ह्रीं हेमकमलोपरिकृतगमन देवकृतातिशयसहिताय श्रीपरमादिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

इत्थं यथा तव विभूति-रभूज्जिनेन्द्र,
धर्मोप-देशन विधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्ध-कारा,
तादृक्कुतो ग्रह-गणस्य विकासिनोपि।।37।।

जैसी महिमा तुम विषै, और धरें नहिं कोय।
सूरज में जो जोति है, नहिं तारागण होय।।

ॐ ह्रीं धर्मोपदेशसमये समवसरणविभूतिमंडिताय श्रीपरमादि-परमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।।37।।

श्च्योतन्-मदा-विल-विलोल-कपोल-मूल-
मत्त-भ्रमद्-भ्रमर-नाद-विवृद्ध-कोपम्।
ऐरावताभ - मिभ - मुद्धत - मापतन्तं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदा-श्रितानाम्।।38।।

मद-अवलिप्त-कपोल-मूल अलि कुल झंकारै,
तिन सुन शब्द प्रचण्ड क्रोध उद्धत अति धारै।
काल वरन विकराल कालवय सन्मुख आवै,
ऐरावत सों प्रबल सकल जन भय उपजावै।।
दैखि गयन्द न भय करै, तुम पद महिमा लीन।
विपति-रहित संपति सहित, वरतैं भक्त अदीन।।

ॐ ह्रीं मस्तक गलितमद सुरगजेन्द्रमहादुद्धर भयविनाशकाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

भिन्नेभ-कुम्भ-गल-दुज्ज्वल-शोणिताक्त-
मुक्ताफल-प्रकर-भूषित-भूमिभागः।
बद्ध-क्रमः क्रम-गतं हरिणा-धिपोऽपि,
नाक्रामति क्रम-युगाचल-संश्रितं ते।।39।।

अति मदमत्त गयन्द कुम्भथल नखन विदारै,
मोती रक्त समेत डारि भूतल सिंगारै।
बांकी दाढ़ विशाल वदन में रसना लोलै,
भीम भयानक रूप देखि जन थरहर डोलै।।
ऐसे मृगपति पद तलैं, जो नर आयो होय।
शरण गहे तुम चरण की, बाधा करै न सोय।।

ॐ ह्रीं आदिदेव प्रसादान्महासिंहभयविनाशकाय श्रीयुगादिदेव-परमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वन्हि-कल्पं,
दावानलं ज्वलित-मुज्वल-मुत्स्फुलिंगम्।
विश्वं जिघित्सुमिव सम्मुख-मापतन्तं,
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्य-शेषम्।।40।।
प्रलय पवन कर उठी आज जो तास पटंतर,
वमैं फुलिंग शिखा-उत्तंग परजलैं निरंतर।
जगत समस्त निगल्ल भस्म करहैगी मानों,
तड़तड़ात दव अनल जोर चहुँ दिशा उठानों।।
सो इक छिन में उपशमें, नाम नीर तव लेत।
होय सरोवर परिणमैं, विकसित कमल समेत।।

ॐ ह्रीं श्रीविश्वभक्षणसमर्थ महावन्हिविनाशकाय जिननामजलाय श्रीआदिब्रह्मणे अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ-नीलं,
क्रोधोद्धतं फणिन-मुत्फण-मापतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्त-शंकस्-
त्वन्नाम-नाग-दमनी हृदि यस्य पुंसः।।41।।

कोकिल कंठ-समान श्याम तन क्रोध जलंता,
रक्तनयन फुंकार मार विषकण उगलंता।
फण को ऊँचौ करै वेग ही सन्मुख धाया,
तब जन होय निशंक देखि फणिपति को आया।।
जो चापे निज पग तलैं, व्यापै विष न लगार।
नाग-दमनि तुम नाम की, है जिनके आधार।।

ॐ ह्रीं रक्तनयन सर्प जिननामनागदमन्यौषधये समस्तभय-विनाशकाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

वल्गत्तुरंग - गज - गर्जित - भीम - नाद-
माजौ बलं बलवतामपि भू-पतीनाम्।
उद्यद्-दिवाकर-मयूख-शिखा-पविद्धं,
त्वत्कीर्त्तनात्-तम इवाशु भिदा-मुपैति।।42।।
जिस रनमाहिं भयानक शब्द कर रहे तुरंगम,
घन से गज गरजाहिं मत्त मानो गिरि जंगम।
अति कोलाहल मांहि बात जस नांहि सुनीजै,
राजन को परचण्ड देखि बल धीरज छीनै।।
नाथ तिहारे नामतै, अघ छिनमाहिं पलाय।
ज्यों दिनकर परकाशतै, अंधकार विनशाय।।

ॐ ह्रीं महासंग्रामभयविनाशकाय सर्वांगरक्षणकराय श्रीप्रथम-जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारिवाह-
वेगावतार-तरणातुर-योध-भीमे।
युद्धे जयं विजित-दुर्जय-जेय-पक्षास्-
त्वत्-पाद-पंकज-वना-श्रयिणो लभन्ते।।43।।

मारे जहाँ गयन्द, कुम्भ हथियार विदारे,
उमगे रुधिर प्रवाह वेग जलसम विस्तारे।
होंय तिरन असमर्थ महाजोधा बलपूरे,
तिस रन में जिन तीर भक्त जे हैं नर सूरे।।
दुर्जन अरि कुल जीत के, जय पावैं निकलंक।
तुम पद पंकज मन बसें, ते नर सदा निशंक।।

ॐ ह्रीं महारिपुयुद्धे जय-विजयप्राप्तकाय श्रीआदिवृषभेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

अम्भो-निधौ क्षुभित-भीषण-नक्र-चक्र-
पाठीन-पीठ-भय-दोल्वण-वाडवाग्नौ।
रंगत्तरंग-शिखर-स्थित-यान-पात्रास्-
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्-व्रजन्ति।।44।।

नक्र चक्र मगरादि, मच्छ करि भय उपजावै।
जामें वड़वा अग्नि, दाहतें नीर जलावै।
पार न पावैं जास, थाह नहिं लहिए जाकी,
गरजे अति गम्भीर लहर की गिनति न ताकी।।
सुखसों तिरैं समुद्र को, जे तुम गुण सुमराहिं।
लोल कलोलन के शिखर, पार यान ले जाहिं।।

ॐ ह्रीं महासमुद्रचलितवात महादुर्जयभयविनाशकाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

उद्भूत-भीषण-जलोदर-भार-भुग्नाः,
शोच्यां दशा-मुपगताश्च्युत-जीविताशाः।
त्वत्पाद - पंकज - रजोमृतदिग्ध - देहाः,
मर्त्या भवन्ति मकर-ध्वज-तुल्य-रूपाः।।45।।

महा जलोदर रोग, भार पीड़ित नर जे हैं,
वात, पित्त, कफ, कुष्ट आदि जो रोग गहे हैं।
सोचत रहें उदास, नाहिं जीवन की आशा,
अति घिनावनी देह, धरें दुर्गन्ध निवासा।
तुम पद पंकज धूल को, जो लावै निज अंग।
ते नीरोग शरीर लहि, छिनमें होंय अनंग।।

ॐ ह्रीं दशताप-जलंधराष्टदश-कुष्टसन्निपातमहारोगविनाशकाय परमकामदेवरूपलक्ष्मीदायकादि जिनेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

आपाद-कण्ठ-मुरुश्रृंखल-वेष्टितांगा,
गाढं बृहन्निगड-कोटि-निघृष्ट-जंघाः।
त्वन्नाम-मन्त्र मनिशं मनुजाः स्मरन्तः
सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति।।46।।

पांव कंठतैं जकर बांध सांकल अतिभारी,
गाढ़ी बेड़ी पैर मांहि जिन जांघ विदारी।
भूख, प्यास, चिन्ता शरीर दुख जे विललाने,
शरण नांहि जिन कोय भूप के बन्दीखाने।।
तुम सुमरत स्वयमेव ही, बंधन सब कट जाहिं।
छिनमें ते सम्पति लहैं, चिंता भय विनसाहिं।।

ॐ ह्रीं महाबंधन आपादकंठपर्यन्त बैरीकृतोपद्रवभयविघाताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

मत्त - द्विपेन्द्र - मृगराज - दवानलाहि-
संग्राम-वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाश-मुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तव-मिमं मतिमान-धीते।।47।।

महामत्त गजराज और मृगराज दवानल,
फणपति रण परचण्ड नीरनिधि रोग महाबल।
बंधन ये भय आठ डरपकर मानों नाशैं,
तुम सुमरत छिनमाहिं अभय थानक परकाशैं।।
इस अपार संसार में, शरन नाहिं प्रभु कोय।
तातैं तुम पद-भक्त को, भक्ति सहायी होय।।

ॐ ह्रीं सिंह-गजेन्द्रराक्षसभूतपिशाचशाकिनीरिपु परमोपद्रवविनाशकाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

स्तोत्र-स्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्-निबद्धां
भक्त्या मया विविध-वर्ण-विचित्र-पुष्पां।
धत्ते जनो य इह कण्ठ-गतामजस्रं-
तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः।।48।।

यह गुणमाल विशाल, नाथ तुम गुणन संवारी,
विविध वर्णमय पुहुप गूंथ मैं भक्ति विथारी।
जो नर पहिरैं कण्ठ भावना मन में भावें,
मानतुंग ते निजाधीन शिवलक्ष्मी पावें।।
भाषा भक्तामर कियो, ''हेमराज'' हित-हेत।
जे नर पढ़ें सुभावसों, ते पावैं शिवखेत।।

ॐ ह्रीं पठन-पाठन श्रोतव्य श्रद्धावनत मानतुंगाचार्यादि समस्तजीव कल्याणदाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

ऋद्धि अर्घ्य

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।1।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।2।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहिजिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।3।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।4।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।5।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।6।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।7।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादाणुसारीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।8।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदाराणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।9।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।10।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।11।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।12।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।13।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।14।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।15।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।16।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।17।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।18।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।19।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।20।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।21।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।23।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।24।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।25।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।26।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।27।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।28।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।29।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।30।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परक्कमाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।31।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबंभयारीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।32।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।33।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।34।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।35।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।36।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।37।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।38।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।39।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।40।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।41।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।42।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।43।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।44।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।45।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायदणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।47।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदिमहावीरवड्ढमाणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा अर्घ्यम्।।48।।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृषभनाथतीर्थंकराय नमः।**

अथवा –

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री वृषभनाथतीर्थंकराय नमः।

(इस मंत्र को 108 बार पढ़ते हुए पुष्प या लवंग चढ़ावें।)

जयमाला

भक्तामर के अधिपति जिनवर की, पूजन से शिवद्वार मिले।
पुरुदेव युगादिपुरुष के अर्चन, से सुख का भंडार मिले।।
गर्भागम के छह मास पूर्व, रत्नों की वृष्टि हुई नभ से।
माता मरुदेवी नाभिराय भी, अपना जन्म धन्य समझे।।
जनता ने जयजयकार किया, साकेतपुरी के भाग्य खिले।
भक्तामर के अधिपति जिनवर की, पूजन से शिवद्वार मिले।।1।।

प्रभु गर्भ-जन्म-दीक्षा व ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणपती।
इक बार मेरा कल्याण करो, मेरी सम्यक् हो जाय मती।।
प्रभु ने जो मार्ग प्रवाह किया, उससे जन-जन के भाग्य खिले।
भक्तामर के अधिपति जिनवर की, पूजन से शिवद्वार मिले।।2।।

इस कलियुग में यति मानतुंग ने, उन्हीं प्रथम परमेश्वर की।
भक्तामर की रचना करके, संस्तुति कर ली वृषभेश्वर की।।

उस भक्तामर के माध्यम से, सब जन के हृदय विकार धुले।
भक्तामर के अधिपति जिनवर की, पूजन से शिवद्वार मिले।।3।।

इकबार भोज नृप ने मुनिवर श्री, मानतुंग को बुलवाया।
उपसर्ग समझ यति मौन हुए, तब कवि ने नृप को समझाया।।
हे राजन्! यह अपमान तेरा, करता मुनि इसे प्रहार मिले।
भक्तामर के अधिपति जिनवर की, पूजन से शिवद्वार मिले।।4।।

क्रोधित राजा ने मुनिवर को, बन्दीगृह का मुख दिखा दिया।
अड़तालिस तालों के भीतर, ले जाकर उनको बिठा दिया।।
बन्दीगृह महल समान जिन्हें, उनको क्या कारावास मिले।
भक्तामर के अधिपति जिनवर की, पूजन से शिवद्वार मिले।।5।।

भक्तामर स्तुति रचते ही, अड़तालिस ताले टूट गए।
मुनि को बन्दीगृह से बाहर, लख नृप के छक्के छूट गए।।
मुनिवर का अतिशय देख नृपति सह, जनता के अरमान खिले।
भक्तामर के अधिपति जिनवर की, पूजन से शिवद्वार मिले।।6।।

भक्तामर की पूजा करने, हम द्वार तिहारे आए हैं।
आदीश्वर! तेरे चरणों में, यह इच्छा लेकर आए हैं।।
मेरा मन तुममें लीन रहे, मुझको ऐसा वरदान मिले।
भक्तामर के अधिपति जिनवर की, पूजन से शिवद्वार मिले।।7।।

बीजाक्षर क्लीं सहित भक्तामर, यंत्र बनाया जाता है।
अड़तालिस कोठों से संयुत, मंडल रचवाया जाता है।।
आठों द्रव्यों से पूजा कर, भक्तों को सौख्य अपार मिले।
भक्तामर के अधिपति जिनवर की, पूजन से शिवद्वार मिले।।8।।

भक्तामर का स्तोत्र आज भी, श्रद्धा से जो पढ़ते हैं।
बन्दीगृह के ताले ही क्या, कर्मों के ताले खुलते हैं।।
प्रभु भक्ती से ''चन्दनामती'', हमको भी सुख का सार मिले।
भक्तामर के अधिपति जिनवर की, पूजन से शिवद्वार मिले।।9।।

ॐ ह्रीं भक्तामरस्वामिने श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जो भविजन भक्तामर का, आराधन करते रहते हैं।
अड़तालिस मंत्रों से युत जिनवर का अर्चन करते हैं।।
वे जग के सुख भोग अनुक्रम से शिवपद को लभते हैं।
कहे ''चन्दनामती'' उन्हों के, सर्वमनोरथ फलते हैं।।

।। इत्याशीर्वादःपुष्पांजलिः।।

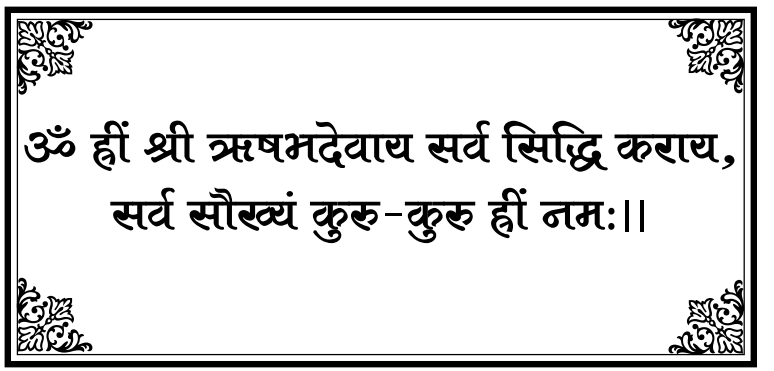

भक्तामर मण्डल विधान की आरती

—आर्यिका चन्दनामती

भक्तामर मण्डल विधान की, आरति करलो आज।
आदि प्रभो के दर्शन से ही, बनते सारे काज।।
ओ जिनवर! हम सब उतारें तेरी आरती.....

कृतयुग के हे प्रथम जिनेश्वर, जग के तुम निर्माता।
अषि मषि आदिक क्रिया बताकर, बन गए आदि विधाता।।
जिनवर! हम सब उतारें तेरी आरती.....।।1।।

कोड़ाकोड़ी वर्ष बाद भी, तुम्हें सभी ध्याते हैं।
मनवचतन से पूजा करके, इच्छित फल पाते हैं।।
जिनवर! हम सब उतारें तेरी आरती.....।।2।।

एक समयश्री मानतुंग-मुनि पर उपसर्ग था आया।
तुम भक्ती से ताले टूटे, कैसी तेरी माया।।
जिनवर! हम सब उतारें तेरी आरती.....।।3।।

भोजराज ने यह अतिशय लख, मुनि को शीश नमाया।
मुनिवर ने भक्तामर का, संक्षिप्त सार बतलाया।।
जिनवर! हम सब उतारें तेरी आरती.....।।4।।

वीतराग प्रभु का आराधन, क्रम से मुक्ति दिलाता।
जग में भी 'चन्दनामती' यह, सर्वसौख्य दिलवाता।।
जिनवर! हम सब उतारें तेरी आरती.....।।5।।

श्री भक्तामर जी का भजन

—पं. हीरालाल कौशल

श्री भक्तामर का पाठ, करो नित प्रात, भक्ति मन लाई।
सब संकट जायें नशाई।।
जो ज्ञान-मान-मतवारे थे, मुनि मानतुंग से हारे थे।
उन चतुराई से नृपति लिया, बहकाई।।सब संकट.।।1।।
मुनि जी को नृपति बुलाया था, सैनिक जा हुक्म सुनाया था।
मुनि वीतराग को आज्ञा नहीं सुहाई।।सब संकट.।।2।।
उपसर्ग घोर तब आया था, बलपूर्वक पकड़ मंगाया था।
हथकड़ी बेड़ियों से तन दिया बंधाई।।सब संकट.।।3।।
मुनि कारागृह भिजवाये थे, अड़तालिस ताले लगाये थे।
क्रोधित नृप बाहर पहरा दिया बिठाई।।सब संकट.।।4।।
मुनि शान्तभाव अपनाया था, श्री आदिनाथ को ध्याया था।
हो ध्यान-मग्न भक्तामर दिया बनाई।।सब संकट.।।5।।
सब बंधन टूट गये मुनि के, ताले सब स्वयं खुले उनके।
कारागृह से आ बाहर दिये दिखाई ।।सब संकट.।।6।।
राजा नत होकर आया था, अपराध क्षमा करवाया था।
मुनि के चरणों में अनुपम भक्ति दिखाई।।सब संकट.।।7।।
जो पाठ भक्ति से करता है, नित ऋषभ-चरण चित धरता है।
जो ऋद्धि-मंत्र का विधिवत् जाप कराई।।सब संकट.।।8।।
भय-विघ्न-उपद्रव टलते हैं, विपदा के दिवस बदलते हैं।
सब मन वाञ्छित हों पूर्ण शान्ति छा जाई।।सब संकट.।।9।।
जो वीतराग आराधन है, आतम उन्नति का साधन है।
उससे प्राणी का भव-बंधन कट जाई।।सब संकट.।।10।।
'कौशल' सुभक्ति को पहिचानो, संसार दृष्टि बंधन जानो।
लो भक्तामर से आत्म-ज्योति प्रकटाई।।सब संकट.।।11।।

णमोकार चालीसा

रचयित्री – आर्यिका चन्दनामती

–दोहा–

वंदूँ श्री अरिहंत पद, सिद्ध नाम सुखकार।
सूरी पाठक साधुगण, हैं जग के आधार।।1।।
इन पाँचों परमेष्ठि से, सहित मूल यह मंत्र।
अपराजित व अनादि है, णमोकार शुभ मंत्र।।2।।
णमोकार महामंत्र को, नमन करूँ शतबार।
चालीसा पढ़कर लहूं, स्वात्मधाम साकार।।3।।

–चौपाई–

हो जैवन्त अनादिमंत्रम्, णमोकार अपराजित मंत्रम् ।।1।।
पंच पदों से युक्त सुयंत्रम्, सर्वमनोरथ सिद्धि सुतंत्रम्।।2।।
पैंतिस अक्षर माने इसमें, अट्ठावन मात्राएं भी हैं।।3।।
अतिशयकारी मंत्र जगत में, सब मंगल में कहा प्रथम है।।4।।
जिसने इसका ध्यान लगाया, मनमन्दिर में इसे बिठाया।।5।।
उसका बेड़ा पार हो गया, भवदधि से उद्धार हो गया।।6।।
अंजन बना निरन्जन क्षण में, शूली बदली सिंहासन में।।7।।
नाग बना फूलों की माला, हो गई शीतल अग्नी ज्वाला।।8।।
जीवन्धर से इसी मंत्र को, सुना श्वान ने मरणासन्न हो।।9।।
शांतभाव से काया तजकर, गया स्वर्ग यक्षेन्द्र बना तब।।10।।
एक बैल ने मंत्र सुना था, राजघराने में जन्मा था।11।।

जातिस्मरण हुआ जब उसको, उसने खोजा उपकारी को।।12।।
पद्मरुची को गले लगाया, आगे मैत्री भाव निभाया।।13।।
कालान्तर में वही पद्मरुचि, राम बने तब बहुत धर्मरुचि।।14।।
बैल बना सुग्रीव बन्धुवर! दोनों के सम्बन्ध मित्रवर।।15।।
रामायण की सत्य कथा है, णमोकार से मिटी व्यथा है।।16।।
ऐसी ही कितनी घटनाएँ, नए पुराने ग्रन्थ बताएँ।।17।।
इसीलिए इस मंत्र की महिमा, कही सभी ने इसकी गरिमा।।18।।
हो अपवित्र पवित्र दशा में, सदा करें संस्मरण हृदय में।।19।।
जपें शुद्धतन से जो माला, वे पाते हैं सौख्य निराला।।20।।
अन्तर्मन पावन होता है, बाहर का अघमल धोता है।।21।।
णमोकार के पैंतिस व्रत हैं, श्रावक करते श्रद्धायुत हैं।।22।।
हर घर के दरवाजे पर तुम, महामंत्र को लिखो जैनगण।।23।।
जैनी संस्कृति दर्शाएगा, सुख समृद्धि भी दिलवाएगा।।24।।
एक तराजू के पलड़े पर, सारे गुण भी रख देने पर।।25।।
दूजा पलड़ा मंत्र सहित जो, उठा न पाए कोई उसको।।26।।
उठते चलते सभी क्षणों में, जंगल पर्वत या महलों में।।27।।
महामंत्र को कभी न छोड़ो, सदा इसी से नाता जोड़ो।।28।।
देखो! इक सुभौम चक्री था, उसने मन में इसे जपा था।।29।।
देव मार नहिं पाया उसको, तब छल युक्ति बताई नृप को।।30।।
उसके चंगुल में फंस करके, लिखा मंत्र राजा ने जल में।।31।।
ज्यों ही उस पर कदम रख दिया, देव की शक्ती प्रगट कर दिया।।32।।
देव ने उसको मार गिराया, नरक धरा को नृप ने पाया।।33।।

मंत्र का यह अपमान कथानक, सचमुच ही है हृदय विदारक।।34।।
भावों से भी न अविनय करना, सदा मंत्र पर श्रद्धा करना।।35।।
इसके लेखन में भी फल है, हाथ नेत्र हो जाएं सफल है।।36।।
णमोकार की बैंक खुली है, ज्ञानमती प्रेरणा मिली है।।37।।
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में, मंत्रों का व्यापक संग्रह है।।38।।
इसकी किरण प्रभा से जग में, फैले सुख शांति जन-जन में।।39।।
मन-वच-तन से इसे नमन है, महामंत्र का करूं स्मरण मैं।।40।।

–शंभु छंद–

यह महामंत्र का चालीसा, जो चालिस दिन तक पढ़ते हैं।
ॐ अथवा असिआउसा मंत्र, या पूर्ण मंत्र जो जपते हैं।।
ॐकार मयी दिव्यध्वनि के, वे इक दिन स्वामी बनते हैं।
परमेष्ठी पद को पाकर वे, खुद णमोकारमय बनते हैं।।1।।

पच्चिस सौ बाइस वीर अब्द, आश्विन शुक्ला एकम तिथि में।
रच दिया ज्ञानमती गणिनी की, शिष्या ''चन्दनामति'' मैंने।।
मैं भी परमेष्ठी पद पाऊँ, प्रभु कब ऐसा दिन आएगा।
जब मेरा मन अन्तर्मन में, रमकर पावन बन जाएगा।।2।।

ॐ ह्रीं विश्वशांतिकराय
श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः।

सम्मेदशिखर टोंक वन्दना

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तीर्थराज सम्मेदशिखर है, शाश्वत सिद्धक्षेत्र जग में।
एक बार जो करे वन्दना, वह भी पुण्यवान सच में।।
ऊँचा पर्वत पार्श्वनाथ हिल, नाम से जाना जाता है।
जिनशासन का सबसे पावन, तीरथ माना जाता है।।1।।

जब प्रत्यक्ष करें यात्रा, उस पुण्य का वर्णन क्या करना।
लेकिन प्रतिदिन भी परोक्ष में, गिरि का ध्यान किया करना।।
आँख बन्दकर करो कल्पना, मेरी यात्रा शुरू हुई।
प्रातःकाल चले सब यात्री, जय जयकारा शुरू हुई।।2।।

एक हाथ में छड़ी दूसरे, में चावल की झोली है।
ज्यादातर सब पैदल हैं, पर किसी-किसी की डोली है।।
कभी न चलने वाले भी, हिम्मत कर पर्वत चढ़ते हैं।
पारस प्रभु के पास पहुँचने, हेतु कदम बढ़ चलते हैं।।3।।

चढ़ते-चढ़ते आठ किलोमीटर, का पथ जब तय होता।
दायें हाथ तरफ तब इक, चौपड़ा कुंड दर्शन होता।।
वहाँ दिगम्बर जिनमंदिर, संस्कृति की अमिट धरोहर है।
पार्श्वनाथ चन्द्रप्रभु बाहूबलि की मूर्ति मनोहर हैं।।4।।

उस मन्दिर में रुककर अपने, प्रभु का दर्शन कर लेना।
सुन्दर बनी धर्मशाला में, इच्छा हो तो ठहर लेना।।
मंदिर दर्शन करके फिर, यात्रा प्रारंभ करो अपनी।
बायें हाथ चलो चढ़ कर जहाँ, गौतम स्वामी टोंक बनी।।5।।

यहाँ पहुँचकर ठंडी-ठंडी, हवा थकान मिटाती है।
गणधर चरण वन्दना से, यात्रा की शक्ती आती है।।
प्रथम टोंक यह हुई पास में, दुतिय टोंक कुंथू जिन की।
तीर्थंकर क्रम में यह पहली, टोंक नमूँ कुंथू प्रभु की।।6।।

इन टोंकों के दर्शन से, उपवास का फल प्रारंभ हुआ।
त्रय प्रदक्षिणा देने से, आगे शुभ गति का बंध हुआ।।
शुभ भावों से आगे बढ़कर, टोंक तीसरी आती है।
श्रीनमिनाथ जिनेश्वर की, वन्दना सहज हो जाती है।।7।।

चौथा नाटक कूट तीर्थंकर, अरहनाथ का आया है।
जहाँ करोड़ों मुनियों ने भी, तपकर शिवपद पाया है।।
वन्दन कर आगे बढ़ने से, मल्लिनाथ के चरण मिले।
आगे छठे टोंक पर श्री, श्रेयाँसनाथ पदकमल मिले।।8।।

इन सबका वन्दन कर मैंने, सिद्धशिला को नमन किया।
वहाँ विराजे सिद्धों को, अपने मन में स्मरण किया।।
थकना नहिं अब पुष्पदंत की, सप्तम टोंक पे चलना है।
आगे चढ़ने हेतु वहीं से, आतमशक्ती भरना है।।9।।

पुष्पदंत प्रभु के चरणों में, अर्घ्य चढ़ाकर नमन किया।
और चले आठवीं टोंक पर, पदमप्रभू की शरण लिया।।
नवमीं टोंक विराजे श्री, मुनिसुव्रत जिन के चरणकमल।
इन सबके पावन पद में, श्रद्धा से मैंने किया नमन।।10।।

हे भव्यात्मन् ! अब दसवीं, चन्द्रप्रभ टोंक पे चलना है।
पहले दौड़-दौड़ कर उतरो, फिर ऊँचाई चढ़ना है।।

चन्द्रप्रभ मंदिर में जाकर, चरणवन्दना करना है।
अपने सारे सुख-दुख को, प्रभु चरण बैठकर कहना है।।11।।

अब ग्यारहवीं टोंक पे चलकर, ऋषभदेव को नमन करो।
गिरि कैलाश से मुक्त हुए, यहाँ उनके चरण चिन्ह प्रणमो।।
श्री शीतल जिनवर की है, बारहवीं टोंक प्रसिद्ध कही।
मन-वच-तन से वन्दन कर, पाओ यात्रा का पुण्य सही।।12।।

श्री अनंत तीर्थंकर का, तेरहवाँ कूट स्वयंभू है।
उनके चरणों में श्रद्धायुत, शीश झुकाकर वन्दूँ मैं।।
संभव जिनवर का चौदहवाँ, धवलकूट माना जाता।
वासुपूज्य जिनका पन्द्रहवां, टोंक सभी को सुखदाता।।13।।

इनको वन्दन कर आगे, अभिनन्दन प्रभु के पास चलो।
बन्दर चिन्ह सहित उन प्रभु की, टोंक पे बन्दर से न डरो।।
अभिनन्दन के चरणों में, कर नमन चलो जलमंदिर तक।
चढ़ो वहाँ से जहाँ है गौतम, गणधर प्रभु की टोंक प्रथम।।14।।

फिर सत्रहवीं टोंक से अपनी, अगली यात्रा करना है।
धर्मनाथ प्रभु के चरणों में, नमन सभी को करना है।।
सुमतिनाथ का अट्ठारहवाँ, टोंक है अविचल कूट कहा।
नौ करोड़ बत्तीसलाख, उपवास का फल मिलता है यहाँ।।15।।

उन्निसवाँ है टोंक शांतिजिन, का जो यहाँ से मोक्ष गये।
नौ करोड़ से अधिक मुनी, इस कुंदकूट से मोक्ष गये।।
शांतिनाथ के संग सब मुनियों, को श्रद्धा से नमन किया।
पुनः बीसवीं टोंक पे जाकर, वीरप्रभू की शरण लिया।।16।।

श्री सुपार्श्व तीर्थंकर इक्कीसवीं टोंक पर राजे हैं।
कहते हैं यहाँ की मिट्टी से, रोग सभी नश जाते हैं।।
इनका वंदन करके पास में, विमल नाथ की टोंक चलो।
बाइसवीं इस टोंक को नमकर, अजितनाथ के निकट चलो।।17।।

थके कदम से तेइसवीं इस, टोंक का वंदन कठिन तो है।
लेकिन यात्रा पूरी करने, का शुभ भाव हृदय में है।।
धीरे-धीरे चढ़कर आखिर, अजितनाथ तक पहुँच गये।
उन चरणों में नमन किया फिर, नेमिनाथ जी प्राप्त हुए।।18।।

इस चौबिसवीं टोंक पे नेमीनाथ चरण को नमन किया।
पारसनाथ प्रभू पाने, हेतू फिर मैंने गमन किया।।
स्वर्णभद्र यह टोंक है अंतिम, यात्रा पूर्ण यहाँ होती।
पार्श्वनाथ की पूजन करके, मन सन्तुष्टि यहाँ होती।।19।।

कुछ क्षण ध्यान करो फिर नीचे, गुफा में स्थित चरण नमो।
खुशी-खुशी वन्दना पूर्ण कर, पर्वत से नीचे उतरो।।
यही वन्दना आत्मा की, भव्यत्व शक्ति बतलाती है।
तभी ''चन्दनामती'' सभी में, भक्ति स्वयं आ जाती है।।20।।

भगवन् ! इस सम्मेदशिखर का, पुनः पुनः दर्शन पाऊँ।
यही भावना है मन में, सिद्धों के गुण में रम जाऊँ।।
इसी क्षेत्र से कभी मुझे, निर्वाण धाम भी मिल जावे।
सिद्ध भक्ति मेरे जीवन में, सिद्ध अवस्था दिलवाये।।21।।

श्री भक्तामर-महाकाव्य-मण्डल

पूजा के मांडले का आकार